बरखा राजेश शर्मा

कहानीकार बरखा शर्मा विवाह से पहले 'क्रान्ति ओमप्रकाश बोरा' नाम से जानी जाती रहीं तथा विवाहोत्तर उनका नाम बरखा राजेश शर्मा है। जन्म 11 जून, 1974 को हिंगोली (महाराष्ट्र) में हुआ। पिता का नाम स्व. ओमप्रकाशजी बोरा है, तथा माता का नाम श्रीमती पुष्पा बोरा है। वे कुल तीन भाई-बहन हैं। पाठशाला स्तरीय शिक्षा आर्य कन्या विद्यालय हिंगोली से तथा एम.ए. भी हिंगोली से ही किया। उनका विवाह बडनेरा के प्रतिष्ठित व्यापारी श्री राजेशजी शर्मा से हुआ। एक बेटी और एक बेटा, दो सन्तान के बाद उन्होंने अपने लेखन कार्य में अधिक रुचि ली। उन्हें कविताएँ और दीर्घ कहानियाँ लिखने का शौक है। वे लेखनी के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था और कुरीतियों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती हैं।

आज तक उनके 'द्वन्द्व' नाम से 10 कहानियों का कथा संग्रह तथा 'पहचान एक प्रयास' संकलन का प्रकाशन हुआ, इस संकलन में कहानियाँ और कविताएँ दोनों प्रकाशित की गई हैं।

महाराष्ट्र के मराठवाड़ा जैसे पिछड़े तथा मराठी भाषी क्षेत्र से श्रीमती बरखा शर्मा जैसी युवा कहानीकार आज की हमारी वर्तमान स्थिति का लेखा-जोखा अपनी कहानियों तथा कविताओं के माध्यम से व्यक्त कर रही हैं। यही उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

कथा सार

'हत्या' बरखा शर्मा की किसान आत्महत्या को लेकर लिखी मौलिक और प्रासंगिक कहानी है। किसान आत्महत्या की समस्या आज गम्भीर बनती जा रही है। देश में सबसे अधिक किसान आत्महत्याएँ महाराष्ट्र में हुई हैं। महाराष्ट्र विदर्भ तथा मराठवाड़ा जैसे सूखाग्रस्त एवं पिछड़े सम्भाग में अधिकांश किसानों आत्महत्याएँ की हैं। यह कहानी प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास की याद दिलाती है। कहानी एकनाथ नामक किसान के आत्महत्या की है। कृषि प्रधान देश भारत का किसान आज अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। यह समस्याएँ आसमानी कम और सुल्तानी अधिक हैं।

साहूकारों द्वारा किसानों को कर्ज देकर उनकी खेती हड़पना आम बात बन चुकी है। जो अवस्था 'गोदान' में होरी की है वही यहाँ एकनाथ की है। मराठी में (अन्नदाता, बड़ी राजा, जगाचा पोशिंदा) जैसे बड़े-बड़े विशेषण धारण करने वाला किसान आज क्यों 'फाँस' को नजदीक कर रहा है? यह हमारी वर्तमान व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न निर्माण करता है। वर्तमान समय में आवश्यकता है काशी जैसे संघर्ष कर, अपने परिवार और खेती को सँभालनेवाली स्त्री की। वह जहाँ शोषक बने साहूकारों को लताड़ती है वहीं कर्मकांड के माध्यम से गरीब किसानों का निर्मम शोषण करनेवाले धर्म के ठेकेदारों को भी बक्शना नहीं चाहती। उसका संयम, विवेक, संघर्ष, जिम्मेदारियाँ आज किसानों में आशा की ज्योति जगाने का काम करती है। यह कहानी आज किसानों के लिए एक मौलिक सन्देश देने में सफल हुई है— 'जीवन मिला है तो मृत्यु भी अटल है, क्यों ना संघर्ष किया जाए? हाँ धनी...मैं संघर्ष करूँगी।' यही कहानी की मौलिकता है।

हत्या

काशी, सुबह-सुबह घर का आँगन साफ कर रही थी। ससुर गणपतराव चबूतरे पर बैठे बीड़ी फूँक रहे थे। काशी की सासू माँ, रमाबाई, नस (तंबाकू) से दाँत घिस रही थीं। छोटे से गाँव की उस गली में मुँह धोने, गरारे की आवाजों के साथ गाय के रँभाने की, बकरी के मिमियाने की आवाजें भी शामिल थीं।

तभी काशी का देवर नारायण, घबराया हुआ दौड़ता आता दिखायी दिया, साथ ही वह जोर से चीख रहा था, ''बाबा, बाबा, आई, वहिनी,'' काशी ने नारायण को देखा, हाथ में पकड़े झाड़ू को एक ओर फेंका और अपनी किनार फटी साड़ी से हाथ पोंछते हुए बोली, ''नारू, नारू, क्या बात है?''

नारू अपने पिता को भींचकर रोने लगा, ''बाबा, बाबा'' गणपतराव ने नारू को झिंझोड़ते हुए कहा, ''नारू, बता तो बेटा बात क्या है?''

लेकिन नारू कुछ कह नहीं पा रहा था, रोते जा रहा था। कॉलेज में पढ़नेवाले देवर को, इस तरह बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोता देखा तो काशी, बुरी तरह आशंकित हो गई। वह नारू को खींचकर अपनी ओर करती हुई बोली, ''नारू, कहता क्यों नहीं? क्या बात है?''

नारू ने कहा, ''वहिनी, दादा को कर्ज से मुक्ति मिल गई'' काशी बोली, ''मैंने कहा था न ईश्वर हमारी जरूर सुनेगा।'' फिर संशयात्मक लहजे में पूछने लगी, ''नारू, अरे यह तो अच्छी खबर है, फिर रोता क्यों है?''

नारू ने कहा, ''हाँ वहिनी, कुछ देर पहले कुछ लड़के, मुझे खेतों की ओर दौड़ते दिखायी दिए। वे मुझे आवाज दे रहे थे, साथ चलने को कह रहे थे, बिना रुके दौड़े चले जा रहे थे, मैं उनके पीछे-पीछे दौड़ता चला गया। मैंने सोचा खेतों में कोई पशु घुस आया है और नुकसान कर रहा है। जब खेत के पास पहुँचा तो मैंने देखा, वहाँ पहले से भीड़ इकट्ठी है। भीड़ को चीरकर मैं आगे पहुँचा तो देखा, दादा कर्ज से मुक्त हो गया है, वहिनी, दादा एक पेड़ से बँधी रस्सी से लटक रहा था। उसका शरीर काला पड़ गया और जबान बाहर आ गई। बाबा, दादा, नीचे गर्दन लटकाये, कर्ज से मुक्ति मिलने की खुशी में, रस्सी के सहारे हौले-हौले झूल रहा है।''

किसान आत्महत्या।

काशी रोते हुए खेत की तरफ भागी जा रही थी, उसके मुँह से ''धनी, धनी, ये क्या किया आपने ?'' की दर्दनाक आवाजें, रास्ते भर गूँज रही थी। काशी के पीछे गणपतराव और रमाबाई, ''एकनाथ, एकनाथ, एकनाथा'', आवाजें लगाते हुए, रोये जा रहे थे, दौड़े जा रहे थे। नारू, अपने पिता को सँभाल रहा था, लेकिन अपने बेटे की मृत्यु के शोक से व्याकुल वृद्ध पिता, बेकाबू होकर, गिरता, उठता दौड़ा चला जा रहा था।

काशी को देखते ही भीड़ ने उसे आगे आने के लिए रास्ता दिया। अपने पति के मृत शरीर को पेड़ से झूलते हुए देख वह बेहोश हो गई। गणपतराव दौड़े-दौड़े, झूलते एकनाथ के पास गए। एकनाथ के दोनों पैर पकड़कर, गाँव वालों की ओर देखकर जोर-जोर से बोले, ''अरे, मुँह क्या देख रहे हो, उतारो मेरे बेटे को, इसे कुछ नहीं हुआ है, अरे अभी कुछ देर पहले तो घर से आया है, जल्दी करो, आओ, जल्दी करो।''

गाँव के लोग गणपतराव को पकड़कर समझाने लगे। लेकिन वह कुछ मानने या समझने की स्थिति में नहीं था। रमाबाई, अपने बेटे के पास, बार-बार लपककर जाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन गाँव वाले रमाबाई को रोक रहे थे। तभी घटनास्थल पर पुलिस पहुँच गई।

रमाबाई, गणपतराव और काशी को जैसे-तैसे पकड़कर, जबरन घर लाया गया। उन तीनों की हृदय विदारक (हृदय चीरनेवाली) चीखें गूँज रही थीं। सिर्फ नारायण गाँव वालों के साथ घटनास्थल पर रुका रहा। रोने की आवाजें और शोर सुनकर, सोये बच्चे जाग गए, कुछ पल वे हतप्रभ होकर सभी को देखते रहे। पड़ोसियों और गाँव वालों को अपने घर के आँगन में जमा देखकर और साथ ही अपनी माँ और दादा-दादी को अपने पिता एकनाथ के लिए रोते देख, बच्चे समझ गए कि उनके सिर से पिता का साया उठ चुका है। उंन तीनों बच्चों की ''बाबा, बाबा'' की आवाजें, उनका दर्दनाक रूदन, कठोर से कठोर व्यक्ति को पिघला रहा था। कुछ देर पहले के शान्त आँगन में मातम का कोहराम छा गया।

***

एकनाथ के अंत्य-यात्रा में बहुत सारे लोग आए। पड़ोसी, गाँव वाले और रिश्तेदारों का आना तो स्वाभाविक था, क्योंकि ये सुख-दुःख के साथी होते हैं। लेकिन अंत्य-यात्रा में सरकारी कर्मचारी, गाँव और शहर के सत्ताधारी पार्टी के नेता, विरोधी पक्ष के नेता, गाँव के साहूकारों का भी जमघट लगा था। बूढ़े बाबा गणपतराव ने बेटा खोया था। उनके घर के ढाँचे की रीढ़ की हड्डी टूटकर चूर हो गई थी।

काशी को गहरा सदमा लगा था, बार-बार बेहोश हो रही थी। होश में आते ही उठकर भागने की कोशिश करती, उसे एकनाथ का शव पेड़ से टँगा दिखता, वह चीखती और फिर से बेहोश हो जाती।

एकनाथ के भाई – नारायण

नारायण की मानसिक हालत खराब हो रही थी। अठारह-उन्नीस वर्ष का नारू, ना तो बच्चा था, ना ही जवान था। उसे खुद को कुछ समझ नहीं आ रहा था, वह अपने माँ, पिता और भाभी को क्या समझाता? अपने छोटे-छोटे भतीजा-भतीजी को चुप कराता। उनकी आँखें पोंछता नारू खुद रोये जा रहा था। एकनाथ अपने भाई नारू को, भाई से ज्यादा अपना बेटा मानता था। भतीजा-भतीजी के मासूम चेहरे, माँ-पिताजी का दर्द भरा आक्रोश, भाभी का रुदन, ये सब नारू को झिंझोड़ रहे थे, उस पर अपने पिता समान भाई की यादों से वह तड़प रहा था।

जब एकनाथ को अग्नि दी गई, तब नारू अपना आपा खो बैठा। गाँव के सावकारों की शर्ट की कालर पकड़कर नारू खींचने लगा। उसका आक्रोश फूट पड़ा, "मेरे दादा ने आत्महत्या नहीं की है, आप लोगों ने मारा है उसे, आपके सूद (ब्याज), आपकी खेली गई चालें, हमारी खेती हथियाने के लिए की गई आपकी कोशिशों ने मेरे दादा को मारा है। मेरे दादा ने आत्महत्या नहीं की, उनकी हत्या हुई है।"

नारू को एक तरफ खींचकर, गाँववालों ने कहा, "नारू, ये क्या कह रहा है? अपने आप को सँभाल। अरे, तेरा दादा तो चला गया। तुझे यहीं रहना है, हम लोगों को कभी भी सावकारों की जरूरत पड़ सकती है। ऐसी बेवकूफी क्यों कर रहा है। थोड़ा धीरज रख, अब घर की जिम्मेदारी तेरे कंधों पर है। तुझे सभी से अपना व्यवहार ठीक रखना होगा। शान्त हो जा नारू।"

मौका देखकर, सावकार वहाँ से तितर-बितर हो गए, लेकिन नारू का गुस्सा शान्त नहीं हुआ। वह राजनैतिक और सरकारी लोगों की ओर देखकर चिल्लाया। "अरे इतने वर्षों में अब तक, आप में से किसी एक ने भी मेरे दादा का साथ दिया क्या? नहीं दिया, मेरे दादा के मरने के बाद आ रहे हो, अगर मेरे दादा को, जीवित रहते, तुम्हारे कंधे पर सिर रखकर रोने देते, उसका थोड़ा सुन लेते तो उसे कंधों पर श्मशान पहुँचाने की नौबत नहीं आती। लेकिन, आप लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता। एक और किसान ने आत्महत्या की, बस अखबार में यह खबर छप जायेगी। आप लोग सफेद कपड़े पहनकर, मृतक के परिवार को सांत्वना देने आए, आप लोगों के दुःख भरे चेहरे अखबार में छप जायेंगे। टी.वी. चैनल पर एक-दो दिन यही खबर बार-बार दिखायी जायेगी। एक ही दृश्य को बार-बार दोहराया जायेगा। बस हो गया फर्ज पूरा। दो-चार दिन में सब ठंडा हो जायेगा, दादा की चिता की राख भी और आपके सहानुभूति का आडम्बर भी। ढोंगी हो आप, मक्कार हो। आप फिर किसी नयी खबर में चमकने को व्यस्त हो जाओगे। आपने कुछ सोचा है? क्या होगा हमारा? मेरे छोटे-छोटे भतीजे-भतीजी, मेरी भाभी, मेरे बूढ़े माँ-बाप का, क्या होगा इनका? कैसे जियेंगे यह सब? क्या मेरे माँ-पिताजी ने कभी ऐसा बुरा स्वप्न भी देखा होगा कि उनका जवान बेटा उनके सामने इस दुनिया से चला जायेगा? मृत्यु

के बाद अग्नि देनेवाला बड़ा बेटा, इन बूढ़ी आँखों के सामने, चिता में जल रहा है।'' नारू की आँखें दुःख और क्रोध से धधक रही थीं। मानो भाई की चिता के अंगारे, नारू की आँखों में जल रहे थे।

नारू चुप नहीं रहा, कहता चला गया, ''अपना देश कृषिप्रधान है ना? क्या यही है हम किसानों की तकदीर? बलीराजा कहते हो ना और बलीराजा की ऐसी मौत?'' नारू के रिश्तेदार उसे शान्त करने की कोशिश कर रहे थे। सभी लोग धीरे-धीरे अपने घर लौट रहे थे और एकनाथ की आत्महत्या पर आपस में बातें कर रहे थे। साथ ही यह भी कह रहे थे, ''भाई की मृत्यु के शोक में नारू पागल हो गया है।'' नारू के पास कुछ पड़ोसी और रिश्तेदार रुके थे। नारू जमीन पर बैठकर अपना सिर पीट रहा था, ''अरे, मैंने तो अपना दादा, अपना बड़ा भाई खोया है, लेकिन आप लोग भी तो खो रहे हो...अनाज पैदा करनेवाले को...आपका पेट भरनेवाले को'' नारू दहाड़ें मारकर रोता जा रहा था।

***

काशी को कोई प्याज सुँघाता, तो कोई जूती सुँघाता, कोई उसके चेहरे पर पानी के छींटे डालता, कोई गाल पर हल्के-हल्के थपथपाकर, होश में लाने की कोशिश कर रहा था। रोज इन्हीं तरीकों से काशी को होश में लाया जा रहा था। चार-पाँच दिन बाद काशी ने खुद को सँभाला, उसने होश सँभालने के बाद देखा कि, इन चार-पाँच दिनों में बच्चों के चेहरे मुरझा गए हैं। एकनाथ के सामने हँसते-खेलते, आज कितने मासूम और सहमे-सहमे हैं, बच्चे दया के पात्र बन गए हैं, सभी शरारतें खो गई हैं, खुशियों और शैतानियों की जगह बच्चों के व्यवहार में सिर्फ दर्द और थकान है। उनके चेहरे की खामोशी, उनकी आँखों का दर्द प्रश्न करता है कि ''हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ? हमने किसी का क्या बिगाड़ा था?''

यह किसान परिवार सच्चाई से अनभिज्ञ नहीं था, जानता था कि एकनाथ चला गया है लेकिन कल्पना करता कि काश...यह बुरा स्वप्न साबित हो, क्योंकि इस एकाएक होने वाली दुःखद घटना से, नये परिवर्तन में खुद को इतनी जल्दी ढाल लेना किसी के लिए भी आसान नहीं था।

पति की मृत्यु के बाद, आज होश सँभालने पर काशी ने अपने देवर नारू के सिर पर हाथ फेरा, नारू, जो अपनी भाभी को माँ समान मानता था, भाभी से लिपटकर फूट-फूटकर रो पड़ा।

काशी ने अपने तीनों बच्चों को एक साथ गले लगाया। अपने बच्चों के आँसू पोंछकर बोली, ''बस करो बच्चो, तुम्हारी माँ जिन्दा है, वह तुम्हें छोड़कर नहीं जाएगी।'' पिता का साया उठ जाने के बाद, बच्चे माँ को रोज दूर-दूर से देख रहे थे। वे चुप-चुप थे, आज माँ के गले लगाते ही वे बिलख-बिलखकर रोये।

काशी की सास - रमाबाई

काशी ने अपने ससुर गणपतराव और सासू माँ रमाबाई को सांत्वना दी, ''आई, बाबा, आपका लाडला बेटा तो चला गया लेकिन हम सब यहीं हैं। परेशानियाँ, जिम्मेदारियाँ, सबकुछ है अपने साथ। अगर हमें जीना है तो हिम्मत रखनी होगी। मेरे लिए, नारू के लिए, आपके पोते-पोतियों के लिए आपको जीना है और खुद हिम्मत रखकर, हमें हिम्मत देना है। बाबा, आनेवाले कल के लिए बहुत साहस और समझदारी की जरूरत होगी। अगर आप दोनों कमजोर हो जायेंगे, हार जायेंगे तो हमें कौन सँभालेगा? आपका साथ हमारे लिए बहुत जरूरी है।''

अपनी 30 वर्ष से भी छोटी बहू के मुँह से ऐसी समझदारी की बातें सुनकर और बहू की इतनी हिम्मत देखकर, गणपतराव लड़खड़ाते हुए उठकर आए, काशी के सिर पर हाथ रखा और रोते-रोते कहने लगे, ''काशी, तुझमें बहुत हिम्मत है बेटा, तू जरूर इस घर को सँभाल लेगी। मेरा एकनाथ भी बहुत हिम्मतवाला था रे, लेकिन बहुत थक गया था वह। कहाँ तक हिम्मत रखता? चला गया बेचारा। अब कभी नहीं आएगा।'' गणपतराव गमछे से आँसू पोंछने लगे।

काशी ने कहा, ''बाबा, सँभालिए अपने आपको, हमें चार दिन कोई भी सहानुभूति देगा। उसके बाद अपनी लड़ाई खुद ही लड़नी होगी। धनी चले गए किन्तु उन्हें याद करके हम हताश बैठे रहेंगे तो इन फैली हुई परेशानियों, समस्याओं से कैसे निपटेंगे?''

गणपतराव सँभलते हुए बोले, ''काशी, तू सही कह रही है, लेकिन फिक्र तो होती है ना बेटा। एकनाथ खुद सातवीं पास था लेकिन उसने अपनी बहनों को 12वीं, 14वीं तक पढ़ाया था, उनकी शादी का तू तो जानती है सबकुछ। अब नारू की पढ़ाई का क्या होगा? और तेरे बच्चे...?'' गणपतराव का गला रूँध गया, वे आगे कुछ कह नहीं पाये। बूढ़ा बाप फिर से जवान बेटे को आवाज देकर रोने लगा, ''एकनाथ, क्या किया रे ये...?''

***

काशी ने देखा बच्चे सो गए हैं। बच्चों के आँसू के सूखे निशान देखकर, काशी के मन में टीस उठी। उसका मन भर आया, बिना चटाई के जमीन पर लेटते हुए वह सोचने लगी, ''धनी, आपने यह क्या कर लिया? क्यों किया ऐसा? मुसीबतों से डरकर पलायन कर गए? आपने यह क्यों नहीं सोचा कि आपके बाद आपके परिवार के 7 सदस्यों का क्या होगा? आप मुझपर कितनी बड़ी जिम्मेदारी डालकर चले गए? क्या आपको विश्वास था कि मैं अपनी कसौटी पर खरी उतरूँगी?''

काशी ने एक आह भरी, लम्बी साँस लेते हुए व मन ही मन फिर एकनाथ से बातें करने लगी। ''धनी, कल रात से एक इच्छा मन में आ रही है...आई-बाबा, नारू और बच्चों के खाने में जहर मिला दें और खुद भी जहर खाकर सो जाऊँ...सोचती

आर्थिक विपन्नता

हूँ, ऐसा करने से सभी समस्याओं से एक साथ सभी को छुटकारा मिल जायेगा? लेकिन...कुछ पल में ही विचार बदल जाता है, जीवन मिला है तो मृत्यु भी अटल है, क्यों ना संघर्ष किया जाए? हाँ धनी...मैं संघर्ष करूँगी, मैं अपने नारू और बच्चों को शिक्षित बनाऊँगी। आपका सपना जरूर पूरा करूँगी। लेकिन मेरा भी एक सपना है, मैं चाहती हूँ कि मेरे बच्चे और नारू पढ़े-लिखें, प्रगति करें, साथ ही वह खेती भी करें, हम किसान हैं, भूमिपुत्र हैं, यह ना भूलें पृथ्वी पर बलीराजा, अन्नदाता का रूप है, वह अपनी गरिमा सँभालें।''

***

चार दिन बाद एकनाथ की तेरहवीं थी। सांत्वना देने वालों का ताँता लगा रहता था। सबकुछ पता होने पर भी आनेवाला, हर कोई, एकनाथ की मृत्यु पर सवाल करता था, विषय को कुरेदता और उसके बाद एकनाथ के पीछे (मृत्यु के बाद), क्या-क्या दान-धर्म करना चाहिए बताता, उसकी आत्मा की शान्ति के लिए क्या उपाय करना चाहिए, यह बताकर जाता। मजबूरी थी, सबका सुन लेने के सिवा कोई पर्याय नहीं था। दुःख के समय किसी को पलटकर जवाब भी तो नहीं दिया जा सकता, और घर आए मेहमान को क्या कह सकते हैं?

एकनाथ की तेरहवीं का कार्यक्रम ठीक से नियोजन करने, कुछ बिरादरी के लोग, कुछ गाँव के लोग, आँगन में बैठे थे। घर के रिश्तेदार भी सम्मिलित थे। पंडितजी, अलग से एक कुर्सी पर विराजमान थे। पंडितजी ने पूजा (तेरहवीं की) की सामान की सूची थमायी। फिर ब्राह्मणों को, रिश्तेदारों और गाँव के लोगों को तेरहवीं पर भोजन कराने का रिवाज बताया, उसके बाद पंडितजी ने मृतक का परलोक सुधारने के लिए दान-धर्म करना अनिवार्य बताया। पंडितजी ने यह भी उल्लेख किया कि किस चीज के दान करने से मरनेवाले को यह फल मिलेगा, कौन-कौन-सी चीजों के दान करने से पृथ्वी से परलोक तक की यात्रा में क्या-क्या सुविधा होगी, यह भी समझाया गया।

सभी चुपचाप बैठे सुन रहे थे। कोई बड़े-बुजुर्ग, पंडितजी का वाक्य समाप्त होने पर हाँ में हाँ मिला रहे थे तो कोई गर्दन धीरे-धीरे हिलाकर, बात को हम समझ रहे हैं, ऐसा अहसास दिला रहे थे।

अब तक चुपचाप बैठी काशी आखिर बोल पड़ी, ''पंडित काका, घर में सौ ग्राम चाँदी भी नहीं बची। 4 साल से खेत में फसल नहीं आ रही है। सात एकड़ खेत में से पाँच टुकड़े, तीन अलग-अलग सावकारों के पास गिरवी पड़े हैं। फसल हो या ना हो सूद (ब्याज) तो देना पड़ता है, फिर से बीज के लिए कर्ज लेना पड़ता है, दिन प्रतिदिन बढ़ती ब्याज पर ब्याज की चकरी से हम आधी से ज्यादा जमीन खो चुके हैं। हम खुद फटे कपड़े पहनते हैं, सूखी रोटी पानी के साथ

खाकर आधा पेट भरते हैं, लेकिन हम सावकारों को रुपये देते हैं ताकि वे रेशम के वस्त्र पहन सकें और हलवा-पूरी खा सकें। थोड़ी-बहुत सरकारी मदद कभी मिल भी जाती है, तो वह मदद ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। मेरे धनी ने बहुत जगह मदद की गुहार लगायी, रोज फटे जूते पहनकर फिरते थे। तालुके के बड़े-बड़े नेता के पास, अलग-अलग कार्यालयों में जाकर मदद की भीख माँगी। आखिर कोई उम्मीद ना बची और गाँव में रहना दुश्वार हो गया क्योंकि हमारी जमीन के बचे हुए दो टुकड़े भी कुछ लोगों की आँखों की किरकिरी बन गए थे। कोई हल नहीं बचा तब परेशान और हताश होकर मेरे धनी एकनाथ ने आत्महत्या कर ली।

काशी का चेहरा लाल हो गया था, आँखों से आँसू गिर रहे थे, लेकिन वह विराम लिए बिना कहती जा रही थी, ''पंडित काका, अपने आप को खत्म करना इतना आसान है क्या? घर से खेत में फाँसी लेने जाते समय, आखिरी बार जब अपने बच्चों को उन्होंने देखा होगा तो क्या उनके पैर नहीं कँपकँपाये होंगे? उन्होंने कैसे अपने कलेजे पर पत्थर रखा होगा? जाते समय अपने बूढ़े माँ-बाप का चेहरा याद कर, वे कितने विचलित हुए होंगे? शादी के दिन मेरी कलाई में सजी हरी चूड़ियों के साथ हथेली पर रंगी गहरी मेहंदी देखते हुए उन्होंने कहा था, 'काशी, तुमने मेरे नाम का कुमकुम अपने मस्तक पर लगाया है, मैं तेरे हाथों की इन लकीरों में खुशियाँ ही खुशियाँ भर दूँगा।' पंडित काका, क्या उन्हें, मुझे दिया गया वचन याद नहीं आया होगा? जीवन-मृत्यु के बीच की, जब उन्होंने आखिरी साँस ली होगी, तब अपने जीवन-साथी को बीच राह में अकेला छोड़ जाते हुए, उनकी आत्मा ने, उन्हें कितना धिक्कारा होगा? उन्होंने आत्महत्या के लिए कैसे अपने आप को मजबूत किया होगा? गले में फाँसी का फंदा डालते समय, धनी के कानों में छोटे भाई की 'दादा दादा' की आवाजें जरूर गूँजी होगी।''

किसी एक महिला रिश्तेदार ने काशी के कंधे पर हाथ रखकर धीरे से कहा, ''बस कर काशी, बस कर अब।'' काशी को कोई सुध नहीं थी, वह झरते आँसुओं के साथ कहते जा रही थी, ''पंडित काका, अभी आस-पड़ोस के लोग मदद कर रहे हैं, थोड़ा बहुत सामान लेकर हम तेरहवीं तक घर चला रहे हैं, रस्में, रीति-रिवाज पूरे कर रहे हैं। ये लोग भी कब तक हमें साथ दे पायेंगे? इनके भी घर-द्वार हैं। और हालात हमारे-इनके मिलते-जुलते ही तो हैं। धनी की तेरहवीं के लिए मैं और एक कर्ज किसी से ले लूँ, और दान-धर्म करूँ, बिरादरी में, गाँव में मृत्यु भोज करूँ तो क्या मेरे पति की आत्मा को शान्ति होगी? नहीं ना? पंडित काका, उनकी आत्मा को तो तभी शान्ति होगी जब नारू पढ़-लिख लेगा, हम फिर से सात एकड़ के खेत में अपना खेत बनाकर बीज बोयेंगे। उनकी आत्मा को शान्ति तब मिलेगी, जब बच्चे दिवाली को दूसरे बच्चों के पटाखे देखने के

बजाय, नये कपड़े पहनकर खुद पटाखे चलायेंगे। मेरे धनी की आत्मा तो तब खुश होगी जब आई-बाबा सब चिन्ता छोड़कर कीर्तन करेंगे, पंढरपुर के मन्दिर में विठ्ठल का नाम लेंगे।''

पंडित काका की आँखें भर आईं। उन्होंने अपने बड़े-लाल रूमाल से आँखें पोंछी और बोले, ''हाँ बेटी, तुम ठीक कहती हो, अगर अपनी परिस्थिति नहीं है तब तो सिर्फ जरूरी है, उतना ही खर्च करो। मुझे कोई दान-दक्षिणा नहीं चाहिए। मुझे 11 रुपये दक्षिणा देना, काफी है। जितना सामान पूजा के लिए जरूरी है, उतना लिखवा देता हूँ, क्योंकि अपने धर्म के अनुसार पूजा जरूरी है, पूजा के बाद अनावश्यक भोज करना जरूरी नहीं है, कितने लोगों को भोजन करवाना जरूरी है, वह मैं बता दूँगा। चिन्ता ना करो बेटी, तुम पर अब कोई बोझ नहीं होगा। माँ भगवती तुम पर कृपा करेंगी और तुम अपने लक्ष्य में सफल रहोगी।''

***

एकनाथ की तेरहवीं हो गई। दूसरे ही दिन हाथ में खुरपी और टोकरा लेकर काशी घर से निकल पड़ी।

रमाबाई ने पूछा, ''काशी कहाँ जा रही हो? कल ही एकनाथ की तेरहवीं हुई है। गाँव के लोग क्या कहेंगे? अभी तो मेहमान घर में आने-जाने शुरू ही हैं।''

''मेहमानों को आप सँभालो, मैं दूसरों के खेतों पर काम करने जा रही हूँ। थोड़ा इंतजाम होते ही, जल्दी अपने खेत पर काम शुरू करेंगे और हाँ, नारू से कहना आज से कॉलेज जाना शुरू करे, कॉलेज से लौटते समय, जो-जो काम मैंने बताये हैं, याद से करता आए। अब उसे पढ़ाई के साथ-साथ थोड़ी बहुत मेरी मदद करनी होगी।'' पीछे से नारायण की आवाज आई, ''हाँ, वहिनी, जरूर, आप बेफिक्र जाइए, मैं आपके साथ हूँ।''

रमाबाई ने दोनों हाथों से बलाएँ लेकर काशी की नजर उतारी और कहा ''अब जाओ, हर बुरी नजर तुझसे दूर रहेंगी।''

***